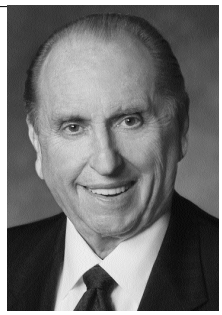

अध्यक्ष थॉमस एस.मॉनसन द्वारा

''मुझ से सीखो''

अन्तिम दिनों के संतों का यीशु मसीह गिरजाघर में,हम सभी शिक्षक और हम सभी सीखने वाले हैं । हमारे प्रभु के इस विन्रम आमंत्रण पर हम सभी आते हैं: ''मुझ से सीखो ... और तुम अपने मन में विश्राम पाओगें ।''[1]

मैं सभी अन्तिम दिनों के संतों को निंमत्रण देता हूं अपने प्रयासों पर चिन्तन कर शिक्षा दो और सीखो और उद्धारकर्ता की ओर देखों जैसे वह हमारा इन्हें करने में मार्गदर्शक हो । हम जानते हैं कि यह शिक्षा परमेश्वर की तरफ से आती है न की मात्र शिक्षक की ओर से । वह हमें हमारे प्रभु परमेश्वर से प्रेम करना सीखते हैं,अपने पूरे हृदय से, अपनी पूरी आत्मा से,अपनी पूरी सार्म्थय से और अपने पूरे मन से,और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम कर, क्योंकि स्वामी ही शिक्षक है और सम्पूर्ण जीवन का उदाहरण है ।

वह वही है जो घोषणा करता है : ''मेरे पीछे हो ले ।''[3] " मैंने तुम्हारे लिये एक उदाहरण तैयार किया है ।''[4]

तुम्हारे परिवर्तित होने के बावजूद

यीशु ने जैसे मत्ती लेख में एक सधारण सा गहरा सत्य सीखाया था । वह और उसके चेलों का रुपान्तर पहाड़ी से चले जाने के बाद , वे गलीली पर रुके और फिर कफरनहूम चले गएं । वहां पर चेले यीशु के पास आकर, पूछने लगें:

''स्वर्ग के राज्य में बड़ा कौन है ?

''और यीशु ने एक बालक को पास बुलाकर ,उनके बीच में खड़ा किया,

''और कहा, मैं तुम से सच कहता हूं, *जब तक की तुम न फिरो* और बालकों के समान न बनो, तुम स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने नहीं पाओगे ।''[5]

गिरजा में,सुसमाचार शिक्षा के उदेश्य परमेश्वर के बच्चो के दिमाग में जानकारी देना ही नहीं है, चाहे घर हो, कक्षा में,या मिशन में हो । यह ये नहीं दर्शाता है कितना अभिभावक,शिक्षक या प्रचारक जानते हैं । न ही यह महज उद्धारकर्ता और उसके गिरजे के विषय के ज्ञान को बढ़ाता है ।

शिक्षा के मूल उदेश्य स्वर्गीय पिता के पुत्र और पुत्रीयों की सहायता उसकी उपस्थित में वापस लौटने में और उसके साथ अनन्त जीवन का आनन्द लेने में कराना है । इसे करने से,सुसमाचार शिक्षा उन्हें शिष्यता का दैनिकी पथ का और पवित्र अनुबंध के साथ का प्रोत्साहना देता है । उदेश्य है व्यक्तिगत को उसके बारें में सोचने ,महसूस करने,और सुसमाचार नियमों को जीने के लिये कुछ करने को प्रेरिता करता है । प्रभु यीशु मसीह में विश्वास उत्पन्न करने और उसके सुसमाचार से *परिवर्तित* होने का मुल आधार है ।

शिक्षा जो आशीषित और परिवर्तित और बचाव करती है ही शिक्षा है जिससे उद्धारकर्ता के उदेश्य का अनुसरण करना है । शिक्षक जो उद्धारकर्ता के प्रेम और सेवा करने के जिन्हें वे शिक्षित करते हैं के उदाहरण को अनुसरण करना है । वे उनके सुनने वालो को प्रभावित पवित्र अनन्त सच्चाई के सबक के साथ कराते हैं । वे जीवन का अनुसरण कर जीने की योग्यता से करते हैं ।

प्रेम और सेवा

उद्धारकर्ता का सम्पूर्ण सेवकाई पड़ोसी से प्रेम करने के उदाहरण से भरी है । सच में, उसका प्रेम और सेवा अक्सर उसके सबक रहे है । उसी तरह से, मुझे याद है अच्छे शिक्षक जानते हैं, प्रेम करते,और अपने विधार्थीयों का ध्यान रखते हैं । वे खोई हुई भेड़ों को ढुढ़ते है । वे जीवन के सबक सीखाते है जिसे मैं सर्वदा याद रखता हूं ।

एक ऐसी ही शिक्षिका थी लुसी ग्रेटॅग । वह अपने हर छात्र को जानती थी । वह बिना असफल हुए जो रविवार को नहीं आते या नहीं आ सके को फोन करती थी । हम जानते थे वह हमारी परवाह करती थी । हम में से कोई भी उन्हें या उनके सीखाए सबकों को कभी भुला सका है ।

बहुत सालों बाद, जब लुसी अपने जीवन के अन्त के लम्हों में थी,मैंने उन से भेट की थी । हम ने उन बहुत पहले के दिनों की यादों को ताजा किया जब वह हमारी शिक्षिका थी । हम ने अपनी कक्षा के प्रेत्यक सदस्यों के बारे में बोला और चर्चा की कि वे सब अब क्या कर रहे हैं । उनका प्यार और ध्यान रखना जीवनभर की विविधता है ।

मैं सिद्धान्त और अनुबंद में पाए गए प्रभु के आदेश से प्रेम करता हूं ।

''मैंने आप को एक आज्ञा दी है कि राज्य के सिद्धान्तों को आप एक दूसरे को सीखा सकते हैं ।

''तुम मेहनत से शिक्षा दो और मेरी महिमा तुम्हारी होगी ।''[6]

लुसी ग्रेटॅक ने मेहनत से सीखाया था क्योंकि वह अथके करना पसन्द करती थी ।

आशा और सच्चाई देना

प्रेरित पौलुस ने सलाह दी थी, ''जो कोई तुम से तुम्हारी आशा के विषय में पूछे, उसे उत्तर देने के लिये सर्वदा तैयार रहो ।''[7]

शायद सब से बड़ी आशा एक शिक्षक दे सकता है यीशु मसीह के सुसमाचार में पाई जाने वाली सच्चाई की आशा है ।

''और वह कौन सी वस्तु है जिसकी आशा तुम्हें करनी चाहिए?'' मॉरमन ने पूछा था । सुनो,मैं तुमसे कहता हूं कि मसीह के प्रायश्चित और पुनजीर्वित किए जाने की उसकी शक्ति के द्वारा अनन्त जीवन के लिए उठाये जाने की आशा तुम कर सकते हो,और यह तुम्हारे विश्वास के कारण होगा ।''[8]

शिक्षकों,अपनी आवाज उठाओ और ईश्वरत्व की प्रकृति की सच्चाई की साक्षी दो । मॉरमन की पुस्तक के विषय की अपनी गवाही की घोषण करो । उद्धार की योजना में की सुंदर और महिमापूर्ण सच्चाई का वर्णन करो । गिरजा के स्वीकृत समाग्री का इस्तमाल करो,विशेषकर धर्मशास्त्रों का,यीशु मसीह के पुनस्थापित सुसमाचार की सच्चाई को उसकी शुद्धता और सरलता में शिक्षा दो । उद्धारकर्ता के अनुसरण का स्मरण करो, ''तुम धर्मशास्त्रो में ढूढ़ते हो,क्योंकि समझते हो,कि उसमें अनन्त जीवन तुम्हें मिलता है,और यह वही हैं जो मेरी गवाही देता है ।''[9]

परमेश्वर के बच्चो की समझने में मदद करो कि जीवन में क्या यथार्थ और महत्वपुर्ण है । उनकी सहायता मार्ग को चुनने में बल प्रदान कर करो जोकि अनन्त जीवन के रास्ते में उन्हें सुरक्षित रखेंगा ।

सत्य सीखाओ,और पवित्र आत्मा तुम्हारे परिश्रम में साथ होगा ।

''मुझ से सीखो ''

क्योंकि यीशु मसीह अपने पिता के प्रति पूरी तरह से आज्ञाकारी और समर्पित था, वह ''बुद्धि और डील-डौल में, और परमेश्वर और मनुष्यों के अनुग्रह में बढ़ता गया ।''[10] क्या हम में ऐसा करने की लगन है? जैसे यीशु में थी ''महीमा के लिये महिमा प्राप्त करना,''[11] हमें धैर्यपूर्ण और लगातार परमेश्वर की ज्योति और ज्ञान की खोज अपने सुसमाचार को सीखने का प्रयास करके करना है ।

सुनना एक महत्वपुर्ण तत्व है सीखने का । जब सीखाने की तैयारी करते हैं,हमें प्रार्थनापूर्वक पवित्र आत्मा की पुष्टी और प्रेरणा को खोजना है । हमें चिन्तन करना,हमें प्रार्थना करना है,हमें सुसमाचार की अध्याय को लागू करना है और हमें पिता की हमारे प्रति इच्छा को खोजना है ।[12]

यीशु ने ''दृष्टान्त द्वारा बहुत सी बातें सीखाई थी,''[13] जिसमें कानों को सुनने की,आखों को देखने,और हृदय को समझने की आवश्यकता है । जैसे हम योग्यता से जीते है,हम अच्छे से पवित्र आत्मा की फुसफुसाहट को सुन सकते है, जो कि हमें ''सब बातें सीखाएगा,और जो कुछ तुम से कहा है सम्रण कराएगा ।''[14]

जब हम प्रभु के विन्रम निंमत्रण का उत्तर देते हैं, ''मुझ से सीखो,'' हम उसकी पवित्र सामर्थ्य को ग्रहण करते हैं । चलो हम,इसलिए,आज्ञाकारी की आत्मा में आगे बढ़े,अपने उदाहरणकर्ता का अनुसरण करने के द्वारा शिक्षा दे जैसे वह हमें शिक्षा देता है और सीखाता है जैसे वह हमें सीखाना चाहेगा ।

टिपण्णी

1. **मत्ती** 11:29 ।
2. **यूहन्ना** 3:2 ।
3. **लूका** 18:22 ।
4. 3 **नेफी** 18:16 ।
5. **मत्ती** 18:1–3, **ध्यान से जोड़े** ।
6. **सिद्धान्त और अनुबंध** 88:77–78 ।
7. 1 **पतरस** 3:15
8. **मरोनी** 7:41 ।
9. **यूहन्ना** 5:39 ।
10. **लूका** 2:52 ।
11. **सिद्धान्त और अनुबंध** 93:12 ।
12. देखें **यूहन्ना** 5:30 ।
13. **मरकुस** 4:2 ।
14. **यूहन्ना** 14:26 ।

इस संदेश से शिक्षा

अध्यक्ष मॉनसन ने हमें हमारे शिक्षा देने के प्रयासो पर विचारने और सीखाने और उद्धारकर्ता की ओर देखने में जैसे हमारा मार्गदर्शक करता है आमंत्रण दिया है । आप शायद धर्मशास्त्रों को खोजना चाहे उनके साथ जिन से आप भेंट करते है उन तरीकों को परखे जानने के लिये जिसे यीशु मसीह पढ़ाता और सीखाता था । आप अध्यक्ष मॉनसन के बताएं गए संदर्भो से, उन कुछ धर्मशास्त्रों से शुरु कर सकते हैं, जैसे मत्ती 11:29, यूहन्ना 5:30, और मरकुस 4:2 । आप चर्चा भी कर सकते हैं कैसे आप ने मसीह के बारे में क्या सीखा है ''उसकी पवित्र सामर्थ्य को ग्रहण कर मदद कर सकते हैं ।''

बच्चे

यीशु के विषय में सीखना

पवित्र आत्मा हमें शान्तिपूर्वक अनुभूति का एहसास दे कर हमारी मदद करती है जानने में कि यीशु वास्तविक है और हम से प्रेम करता है । कुछ भी लिखें या बनाएं जिसे आप ने यीशु के विषय में सीखा हो ।

© 2016 Intellectual Reserve, Inc. द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित । भारत में छपी । अंग्रेजी अनुमतिः 6/15 । अनुवाद अनुमतिः 6/15 । *First Presidency Message, March 2016* का अनुवाद । Hindi । 12863 294

परमेश्वर के स्वरुप में सृष्टि की गई

विश्वास, परिवार, सहायता

प्रार्थनापूर्वक इस सामाग्री को पढ़ें और क्या बांटना है को जानने के लिये खोजें । कैसे समझेंगे ''परिवारः संसार को एक घोषणा'' आप के परमेश्वर में विश्वास को बढ़ाएगा उन्हें आशीष देता है जिनका आप भेंट करने वाला शिक्षका के द्वारा ध्यान रखते हैं ?अधिक जानकारी के लिए, पर जाएं **reliefsociety.lds.org** ***पर जाएं ।***

''फिर परमेश्वर ने कहा,हम मनुष्य को अपने स्वरुप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं । ...

''तब परमेश्वर नें मनुष्य को अपने स्वरुप के अनुसार उत्पन्न किया,अपने स्वरुप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया, नर और नारी करके मनुष्यों की सृष्टि की'' (उत्पत्ति 1:26–27)।

परमेश्वर हमारा स्वर्गीय पिता है,और उसने हमें अपने स्वरुप में रचा है । इसी सच्चाई को,अध्यक्ष थॉमस एस. मॉनसन ने कहा : ''परमेश्वर के पास कान है जिस के साथ हमारी प्रार्थनाएं सुनी जाती है । उसके पास आखें है जिस के साथ हमारी प्रतिक्रिया देखी जाती हैं । उसके पास मुहं है जिस के साथ हम से बात करता है । उसके पास दिल है जिसके साथ करुणा और प्रेम को महसूस करता है । वह वासतविक है । वह जीवित है । हम उसके बच्चे उसके स्वरुप में बनाएं गए है । हम उस की तरह दिखते है और वह हमारी तरह दिखता है ।''[1]

''अन्तिम दिनों के संत सभी लोगों को परमेश्वर के बच्चों के रुप में पूरी तरह से और सम्पूर्णता से देखते हैं, वे प्रत्येक व्यक्ति को असल में,प्रकृति,और शक्यता समझते हैं ।''[2] हर कोई स्वर्गीय माता पिता के आत्मिक प्रिय पुत्र या पुत्री है ।''[3]

''भविष्यवक्ता जोसफ स्मिथ ने भी सीखा था कि पमेश्वर की मनोकामना थी कि उसके बच्चो को वही समान्य उत्कृप्ता प्राप्त हो जिसे वह ग्रहण करता है ।''[4] जैसे परमेश्वर ने कहा था,''देखने के लिए,यही मेरा कार्य है और मेरी महिमा है––मनुष्य की अमरता और अनन्त जीवन से होकर जाती है'' (मूसा 1:39)।

अतिरिक्त धर्मशास्त्र

उत्पत्ति 1:26–27; 1 कुरिन्थियों 3:17;
सिद्धान्त और अनुबंध 130:1

धर्मशास्त्रों से

यारद के भाई ने मॉरमन की पुस्तक में प्रकाश के लिये तरीके को खोजा आठ नौकाएं बनाई जो यारदाइयों को पानी पर से वादा की गई भुमि पर ले जाती । उसने ''सोलह छोटे पत्थरों'' को तैयार किया और परमेश्वर से प्रार्थना की अपनी उंगली से ''इन पत्थरों को छू दो'' ''और ऐसा कर दो कि अन्धकार में चमके ।'' और परमेश्वर ने ''हाथ बढ़ाकर उन पत्थरों को एक एक कर अपनी उंगली से छूआ ।'' यारद के भाई की आखों से पर्दा उठ गया, और उसने प्रभु की उंगली को देखा, और जो कि मनुष्य की उंगली के तरह रक्त मांस की थी ।...

''और प्रभु ने उसे उत्तर दियाःमैं जो बातें तुम से कहूगा उन पर क्या तुम विश्वास करोगे ?

''और उसने उत्तर दियाः हां, प्रभु ।''

और ''प्रभु ने अपने आपको [यारद के भाई]'' को दिखाया और कहा, ''क्या तुम देख सकते हो कि मेरे ही स्वरुप में बनाएं गए हो? हां, आरम्भ में सभी मनुष्य मेरे स्वरुप में बनाए गए थे ।'' (देखे एथर 3:1–17 ।)

विवरण

1. गड्ढतणञथ ग. क्तत्थतत, हऋलत्तृ गड्ढञद की खठट्ठठणठज्ञ एड्ढठिथ,ह ड्ढत ॐतत्ट्ठज्ञठत्ट्ठ खठळतज्ञद, ०ळज्ञ. 1966, 63.
2. उतथळठण गतळड्ढट्टथ, ह ठट्टतणड्ढत्ड एड्ढड्ढठ उतट्ट,ह ; थठठ ञण्थत क्तथठथ 7:31–37.
3. ''परिवारः संसार को एक घोषणा,'' *लियाहोना*, नव 2010, 129 ।
4. उतथळठण गतळड्ढट्टथ, ह ठट्टतणड्ढत्ड एड्ढड्ढठ उतट्ट,ह ; थठठ ञण्थत गठञट्टड्डड्ढत्डथ तट्ट खज्ञठथड्ढट्टठत्दथ तट्ट दड्डठ ॐड्डज्ञिट्टड्डः ऋत्तथठळड्ड गण्ड्ढदड्ड (2007), 221.

इस पर विचार करें

कैसे यह जानकर कि प्रत्येक व्यक्ति की रचना परमेश्वर के स्वरुप में की गई थी हमारी दूसरों के साथ संगति करने में सहायक होगा ?

© 2016 Intellectual Reserve, Inc. द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित । भारत में छपी । अंग्रेजी अनुमतिः 6/15 । अनुवाद अनुमतिः 6/15 । *Visiting Teaching Message, March 2016* का अनुवाद । Hindi । 12863 294